Barefoot College (SWRC Tilonia), Rajasthan

Khamayati

Project blueprint for the Scheme: Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India, Ministry of Culture, Government of India

Project Title: Documenting and Promoting Traditional Music and Culture of Rajasthan

About Khamayati

Khamayati has been inspired by the rich and varied legacy of Rajasthani culture, and Komal Kothari, who worked with and established the modern context of these great traditions. SWRC Tilonia, Barefoot College, was initiated into understanding this extraordinary musical tradition, and collaborated with Rupayan Sansthan and Komal Kothari in organizing Lok Utsavs since 1984. The knowledge and legacy of Komalda's tradition of collective work with folk culture continues to inspire all our efforts.

Khamayati is the raga used as the invocation for the beginning of all concerts. The name was chosen as both an invocation, and a celebration of tradition. The project will look at their music, and the community's socio-economic conditions. It will help wherever needed with providing support and assistance to create a better environment for developing their musical tradition.

The preservation of their music is a huge task. The project began with a workshop in consultation with the Manganiars and Langas on the 28th and 29th January 2012 in Barmer. The musicians collectively discussed critical issues, and looked at their own cultural richness and their future. Attention was paid specifically in re-establishing their repertoire, the dissemination of lyrics and songs, by documenting and using notations so that they could be preserved for posterity. Khamayati will provide support and facilitation for the folk culture of Rajasthan. It will nurture and document traditional music and other forms of folk expression in different ways. It will promote women singers to perform and also provide a space for learning.

Objectives

- **Catalogue of traditional/ceremonial expression, melody and songs**
  To produce a catalogue of 74 songs which will not only carry the song lyrics but also a song's meaning and its background story.
  A set of 7 CDs complementing the catalogue, which will have the 74 songs, recorded by different teams of Langa and Manganiar musicians.

Other activities will be carried on based on the funding available for the project from other sources. These may include Lecture Demonstrations and workshops for musician communities.

- **Lecture Demonstrations**
  To promote their art across varied audience, lecture demonstration will be organized where the musicians get a platform to explain their music and perform.

- **Workshops for children from music communities**
  Workshops will be organized for children from music communities to give them a space to learn, experiment and interact with senior musicians and encourage them to take their art forward.

Other Project Activities

(Depending on the availability of funds from other sources)

Activity	Timeframe	Geographical area
Hela Dangal Archiving	April 2014	Dausa
Lecture Demontration	May 2014	Jaipur
Langa and Manganiar Childrens Workshop	June 2014	Barmer

Planned activity from the fund received under ICH scheme

Activity	Time frame	Geographical area
Catalogue of 100 songs from the oral repertoire of Langas and Manganiars, (audio, written catalogue)	July - March	Jaisalmer, Barmer, Jodhpur

Category	No. of Songs	Month
Ragas (Morning, Afternoon, Evening, Night)	10	July
Wedding Songs (Ceremonies: Mehendi, Haldi, Bana-bani, Vidaai)	20	August
Nature (water, birds, wind)	10	September
Seasons	10	October
Sufi	20	November
Songs for daughters/sisters	10	December
Jangra Shaili	20	January
Total Categories = 7	**100**	**7 months**
Post Processing	-	February - March

Field trips will be made to reach out to the musicians of Barmer, Jodhpur and Jaisalmer districts who are experts in the above-mentioned categories and songs from their repertoire would be documented.

Proposed Outcome:

1. A catalogue of 100 songs, with their meanings and elaborate description of their background stories.
2. A series of 7 CDs recorded by Langa and Manganiar musicians, category wise.

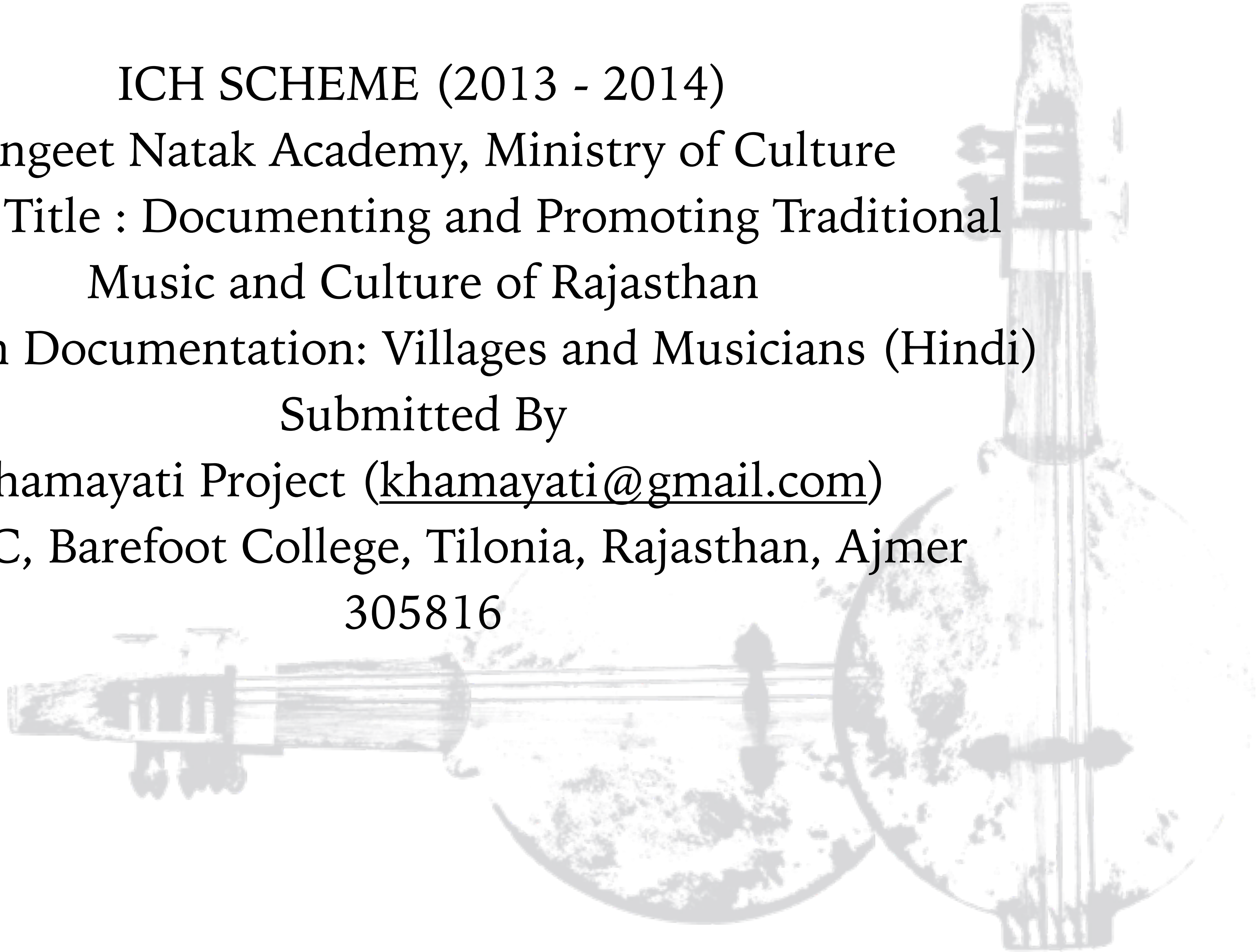

ICH SCHEME (2013 - 2014)

Sangeet Natak Academy, Ministry of Culture

Project Title : Documenting and Promoting Traditional Music and Culture of Rajasthan

Written Documentation: Villages and Musicians (Hindi)

Submitted By

Khamayati Project (khamayati@gmail.com)

SWRC, Barefoot College, Tilonia, Rajasthan, Ajmer 305816

barefoot college

खमायती

SWRC तिलोनिया 1972 से ग्रामीण चेतना एवं विकास का कार्य करती आ रही है। जिसमें पीने का पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोज़गार, संचार और आदि कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण लोगों की परंपरागत ज्ञान व सूझबूझ को पहचान कर उनके साथ, उन्हीं के समुदाय के लिए काम किया जाता है।

1984 में SWRC के संचार विभाग की टीम ने सोचा की आस-पास के लोक कलाकारों को तिलोनिया में एक मंच प्रदान किया जाना चाहिए। जिससे वो कलाकार एक दूसरे की कला को जाने, सीखे और आगे ले जाएं। इस कार्यक्रम को लोक उत्सव के नाम से प्रस्तुत किया गया। अरुणा रॉय और कोमल कोठारी (रूपायन संस्था, जोधपुर) की मुलाकात के बाद, 1986 के लोक उत्सव में कोमल दा के सानिध्य में राजस्थान के कलाकारों की भागदारी बढ़ी। तब से लेकर 2015 तक तिलोनिया में 10 लोक उत्सवों का आयोजन किया जा चुका है। जिसमें करीबन १४ जिले के कलाकारों को मौका मिला। कोमल दा की प्रेरणा और मार्गदर्शन से यह सफर आगे बढ़ा और 2012 में 'खमायती' का रूप लिया। 'खमायती' एक राग का नाम है जिसको गाकर सभी कार्यक्रमों की शुरूआत की जाती है।

करौल बार्कर (इलेस्ट्रेटर, चित्रकला शिक्षक) जो SWRC के साथ 1977 से मित्र रही है। उनके पुत्र जूलियन डंकर्टन के आर्थिक सहयोग से खमायती कार्यक्रम की शुरूआत हुई। 28–29 जनवरी, 2012 को बाड़मेर शहर के कलाकार कॉलोनी में सभी कलाकारों के साथ चर्चा करके इस प्रोजेक्ट को 'खमायती' नाम दिया गया। अरुणा जी के समन्वयन से तथा मनोहर लालस की सलाह से और SWRC टीम के सहयोग से यह कार्यक्रम आगे बढ़ा। जिससे लोक कलाओं को प्रोत्याहन मिला और अगली पीढ़ी के लिए कलाओं का संकलन भी हो सके।

बिसू कलां

ग्राम पंचायत - बीसू कलां, तहसील - शिव, जिला-बाडमेर

राजस्थान, पिनकोड ३४४७०१

गांव बिसू कलां, जुलाई 2014

थार प्रदेश के बाड़मेर जिले में धोरों की धरती पर बसा हुआ है यह गांव बिसू कलां। जहाँ मांगणीयार समुदाय सदियों से रह रहे है। इनके झोपों से निकलती है कमायचा की धुने, ढोलक के ताल और लोक परम्परागत गीतों की आवाज़ें।

शिव से 15 किमी. दूर, जोधपुर जाने वाली सड़क पर स्थित लगभग २०० परीवारों का यह गाँव है जिसमें पुरोहित, नाई, जैन, सुथार, ब्राह्मण, मेघवाल और मांगणीयार समुदाय के लोग रहते हैं। इन में से 15 घर मांगणीयारों के है। मांगणीयार समुदाय गांव के सामाजिक - पारिवारिक कार्यक्रमों को अपने गीत - संगीत से परिपूर्ण करते हैं। जन्म, परण, त्यौहार एंव प्रकृती से सम्बन्धीत जीवन का चित्रण इनके गीतों में मिलता है।

अनौपचारिक घरेलु संगीत शाला

बिसू कलां के इन्ही मांगणियारपरिवारों में से हम ने दो पीरवारों से मुलाकात कि। उस समय चानण खाँ जी जीवित थे। और यह रिकॉर्डिंग करवाने के कुछ महिनों बाद 24 दिसंबर 2015 को उनका स्वर्गवास हो गया। परन्तु जाते-जाते वे बहुत सारी सीख और यादें छोड़ गये। चानण खाँ और मुलतान खाँ सगे भाई है और कई सालों से साथ गाते-बजाते, सीखते-सीखाते थे तथा अपने बच्चो को भी तैयार कर रहे है। यह दो भाई लोक और जांगडा शैली के गीतों के जानकार माने जाते है।

चानण खाँ मांगणियार

चानण खाँ 75 साल के थे। यह कमायचा के बेहतरीन बुजुर्ग कलाकार थे। कोमल कोठारी के सानिध्य में इन्होने अपनी कमायचा कला को उभारा और देश-विदेश में अपनी प्रतीभा दिखाई। लम्बे-पूरे, सीधी कद-काठी के व्यक्ति, लम्बी मूछ, सिर पर पगड़ी, सफेद कुर्ता, ढीली धोती, मोचडी पहने हुए तथा कमायचा कन्धे पर लटकाए हुए चानण खाँ सशस्त्र एक बादशाह की तरह नजर आते थे। सांवला रंग, सरल स्वभाव, आकर्षित व्यक्तित्व के धनी थे चानण खाँ।

मुलतान खाँ मांगणियार

उम्र 58 साल। धोती, कुर्ता, साफा और कानों में लूंग पहने हुए, खुश मिजाज व्यक्तित्व के गायक कलाकार है मुलतान खां। अपने बड़े भाई की तरह यह भी कोमल कोठारी के सानिध्य में तैयार हुए और दुनियाभर में अपनी आवाज़ से अपनी पहचान बनाई। महज़ अनपढ और साक्षर इन सभी कलाकारो ने ना सिर्फ देश की लोक परमपरा को जिन्दा रखा परन्तु उसे एक गरीमा पूर्ण स्थान भी दिलाया।

जांगडा शैली

जांगडा का मतलब है पुरानी, ठोस एवं वजनदार गायकी। एक दूसरे के साथ तालमेल बैठा कर, एक सुर-लय के साथ विशेष अदांज़ में गाने की कला को जांगडा शैली कहते है। यह अक्सर पुराने पारम्परिक सुसज्जित और व्यवस्थित तरीके से गाया जाता है।

कमायचा

कमायचा एक तार-वाद्य यन्त्र है जो मांगणियार समुदाया का मुख्य साज़ माना जाता है। यह एक परम्परागत साज़ है जो कि आम की लकड़ी से बनाया जाता है। इस पर चमड़े की मंढाई की जाती है। इसमें ३ तार बकरे की आँत के और बाकी 24 तार धातु के बने होते है। इसे गज से बजाया जाता है। जिसे घोड़े की बालों से तैयार किया जाता है। तारों में घर्षण करने के लिए बैरजा का उपयोग किया जाता है।

जीवनशैली

जीवनशैली

मांगणियारों द्वारा गाई जाने वाली रागें

राजस्थानी लोक संगीत में मांगणियारों द्वारा लोक गीतों के साथ-साथ पारम्परिक रागों के गीत भी गाए जाते है। रागें जैसे गुढ़ मल्हार, सारंग, शुभ, धानी, सोरठ, मारू रागे जांगड़ा शैली में गाते हैं। हर राग के पीछे छः रागणियो होती है। इस तरह ये छः राग एवं छत्तीस रागणियां होती है।

चानण खाँ, सुल्तान खाँ और रमज़ान खाँ के साथ रिकॉर्डिंग किये गए गानों के बोल। इन गानों में जो रागों की जानकारी दी गई है वो स्वर्गीय चानण जी के अनुसार एकत्रित की गई है।

1. बीसू रो बडलो

राजे ढोला जी वो म्हारा राज मे बीसू रो रमें !

बडलो रें कर अमिया राखो - राज बालम जी !!

हे हमना अन्नदाता रो रे बीसू डे रम बडलो !

रे कर आमें राखो राज बालमजी जागो !!

भागडली धुतारी अमलावां राज श्याम जागो रे !

बीसू रे रम बडलो रे कर अमे राखो राज !!

म्हारा राज रे सोने री सांकलिए !

हिवडे पो मंडावणो म्हारा राज ....

सुधा प्यारा लागो अमलां वा श्याम जागो

2. हस्ती चढ आए

राग आशा - यह राग सुबह ६ से ८ बजे के बीच गाई-बजाई जाती है

आसा अखि अमर धन निरधन कम जिए
गोरी पिडो बेच के मृगा माल चरै
आवो पंछियां जल पिवो नदिया घटे नी नीर
धरम किया धन नी घटे कह गिया दास कबीर
हस्ति चढ आये धनुष उठाये जनक बधाये कर जोडे
राम - जाली चढ जोखे गेहनी गोखे सरब गवेरे जोवे सीतावर रे

मंडली के रे सभी सभी मे उछ्व रे मंडिया आज महाजनक घरे

जानी रे भरत शत्रुधने जी वो भाई रे लक्ष्मण हे रे

आवो अधीर रहनो सधीरि हर हर फरसा नाम हरे
मंडली के रे सभी मे ....

तोरण थाब अजम्बर डम्बर कनक अकाश अबस करे

एसो गज गाये अछो जग मंडल जनक कबर जगदीश फरे

मंडली के रे सभी मे ....

लाखो दल भेले होवे सधीर चवरी फेरा चार फिरै

ऐसो गज गायो मंडल गावे रे मगंला जस तोरै

मंडली के रे सभी मे ....

3. बीनी छोड मीरा भजन

राग तोडी- यह राग प्रातः ८ बजे से १० बजे के बीच
गाई-बजाई जाती है

दोहा :- तोडी मीठी रागणी मझन मीठी सिह री बात गोया रे

गोडा मीठी कामनी रे रण मीठी तलवार रे

ओ पान जिसीपीली भई न पान जैसी पंलग पर पोढालिये!
-२

पहली कटार मेरे हृद्धय मे डारिये !!

भीनी छोड वेद वीर मोहे पीड न्यारी है !

नाडी नही जाणे बेद तू बडो अनाडी है !!

ओ मथुरा मे कान बसे वो ही मेरी यारी है !

उसी को बुला के लाओ वो ही बेद भारी !!

आंखिया अनेक रेख करम रेख न्यारी है !
दातां की बन्तीसी जे मे सोना मे खुयी भीरी है !!

द्धारिकास धार कान जगत रेण सारी है !
दास मीरा लाल गिरधर चरण की बलिहारी है !!

4. शिव भजन

राग बिलावल - यह राग सुबह १० से १२ बजे के बीच
गाई-बजाई जाती है

बिलावल के अंगणे टहलण लागा मोर

दातारो घर मगंतो सुमारो घर चोर

उजली भभुत अंग मस्कत सोवे गंग

राते राते नेन वाकु नीलकण्ठ धाय है

आज तो हमारे भाग महादेव आए है !!

संग की सहेली साथ गवरजा को पुछे वात

सहेली तेरा बडा भाग शंम्भु वर पाए है

आज तो हमारे भाग ....!!

बिछावण बाघवरा खाल ओढवा मिगृ की छाल

गल छोवे रूग माल नाग ज्यू लपटाए है

आज तो हमारे भाग ....!!

आखे ढाढी तानसेन गुण शिव रा गाए है

ऐसे ऐसे भोले शेम्भू मेरे मन भाए है

आज तो हमारे भाग ....!!

5. हेली

राग गूढ मल्हार-यह राग दोपहर १२ से २ बजे के बीच गाई-बजाई जाती है

मूढ मल्हार सुणियो नही तू रियन बधार बार

मजुरे जीवे मजुरे जो दिनडा लिया मुझे भोज लिए भरतार

भोज लिए भरतार जलधण राज रे............................

आडे आडे हमे हे नदिया म्हारा रे २.....

जल दी रे घणेरो घणेरो घणेरा हे ढोला रे

तेरूडे रो बेटो रे लियो थारे साथ रे

हेली थारे मारी राज हुरमा रे हेडाऊतेडे घर ल्याव

राज म्हारे तेडे झार ल्याव ....

म्रगा नैणी रे बालमने तेडे घर ल्याव

छोरी मोरी गावर मद सू भरावा

नकसी रो प्यालो रे धण रे हाथ रे हेली रो राज

भंवर दाता घर ल्याव ल्याव म्रगा नैणी रे राज ....

थे तो म्हारे आया पावणा रे घोडलियारो घमसाण

हेली म्हारे हुरमारे हेडाऊतेडे घर ल्याव हेली ....

6. हालरियो

राग सामेरी - यह राग दोपहर २ बजे से ४ बजे के बीच गाई-बजाई जाती है

मथुरा जी बाजे ढोल

ग्राम हरि गरडी भयी करडी भई कबोण

इण बिध्या मोती बिन्धती सन्ध नी सको बाण

सोम हरि संसार मे केहो वणज कियो

जडफ नाखी हसं नो कौआ हाथ कियो

मथुरा जी मे बाज्या ढोल हे मथुराजी मो बज्या ढोल

गोकला मे हरख भयो हे धन धन हालरिये री मां

भाग रे सुहाग रे बधोणा धन धन हालरिये री मां

ढाढीडे रा बेटा तनो नेतरो हे ढाढिडा रे बेटा थोनो जी

हमे ढोल मंगल ले घर आव हे धन धन हालरिये ....

भाग सुहाग.......................................

खातीजी रा बेटा तनो नेतरा हे खातीजी रा बेटा तनो जी

हमे रे चनण रो पिघलियो ले घर आव हे धन धन हालरिये ..

भाग सुहाग.......................................

7. श्री राधा रानी

राग कल्याण-यह राग दिन अस्त के समय गाई-बजाई जाती है

संध्या वदंन सिर नमन कर बंधन कल्याण

वंधा तो लख जीवे है कर तो राग कल्याण

बंशी बजावत धेन चरावत प्रभु रास रचावत न्यारो

राधा तेरों सांवरो सब सखियन मे प्यारो

श्री राधा राणी दे डारो नी बंशी दयो नी मोरी

इस बंशी मे राधा मेरो प्राण बसत हे

वो ही बंशी तेने चोरी श्री राधा राणी ....

नही वो सोने री बंशी ना ही रूपे री

हरिये बांस की पेहरी श्री राधा राणी ....

कैसो रे बजावो काना कैसो रे गावो

कैसो रे लाओ गायें घेरी श्री राधा राणी ....

हाथ सू बजावे बंशी कान्हों मुख से गावे

चटिये से लावे गैया सारी श्री राधा राणी ....

बोल्या बाई मीरॉ गिरधर नागर

जनम जनम थारी दासी श्री राधा राणी ....

8. पायल गहरी बाजे

राग सोरठ - यह राग रात्री १ बजे से ४ बजे के बीच गाई-बजाई जाती है

जिण संचे सोरठ घडी ज्यो घडियो राग खंगार

ओ संचा गल गया लदे नी गया लुहार रे ......

हे सोरठ गढा से उतरी झांझड रे झणकार

बाजे पगा रे पायला जद धूजे गढ गिरनार

पायल गहरी रे बाजणी रे रसिलो महला मे जागे

मृगा नेणी रा बालम संधा गारी रा बालम

पायल रम झम बाजे घूघरिया बाज्या म्हारा राज

डूॅगर माथे डूॅगरी सोनो घडे सुनार

पायल बिधिया घड दो बाजणा रसेले रे घडियाल पायल गहरी ....

दूध भरावो नदियॉ माखन बधावा पाल

ढोलो जी धोवे धोतिया घण सुखावण हार पायल गहरी ....

बावड़ी

ग्राम पंचायत - बावड़ी, तहसील - चौहटन, जिला - बाडमेर

राजस्थान पिन कोड - ३४४७०२

गाँव बावड़ी जो जिला बाड़मेर से 78 कि.मी. तहसील चौहटन से 30 कि.मी व भारत पाकिस्तान की सीमा से करीबन 10 कि.मी. दूर सीमा रोड़ पर स्थित है। यहाँ लगभग 250 घरों की बस्ती है। इनमें से 100 परिवार अपने अलग-अलग खेतों में रहते हैं। इस गाँव में मेघवाल, जाट, पुरोहित, नाई, सुथार, राजपूत, भील और मुसलमान आदि रहते है। लोगों के बताये अनुसार यहां मारवाड़ से अमरकोट - सिन्ध जाने वाले रास्ते में पानी की एक बावड़ीहुआ करती थी जहाँ राहगीर व लोग पानी पीया करते थे। इसलिए इस गाँव का नाम बावड़ी पड़ा। कुछ परिवारों ने भारत पाकिस्तान की 1971 की लड़ाई के बाद भारत मे शरण ली। अभी यहाँ पर पंचायत का मुख्यालय, सरकारी हाई स्कूल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, पटवार घर व पुलिस चौकी है।

मेघवाल समुदाय का पारम्परिक व्यवसाय मुख्यतः कपड़ा बुनना, खेती, मजदूरी व पशुपालन करना है। साथ ही इन लोगो ने अपनी परम्परागत संस्कृति को जीवित रखने के लिए चौतारा वीणा के माध्यम से गायकी कला को भी बढ़ावा दिया है। इनकी सादगी भरी जीवन शैली ने कबीर और कई संतो के कथन को जीवन्त किया है। जब मनोरंजन व ज्ञान प्रचार के साधन नहीं थे तब ऐसी लोक गायकी ने भक्ति आन्दोलन को आगे बढाया। आज भी कबीर, मीरा, रामापीर, चेतावनी भजन गायकी के द्वारा ये इंसानियत की अवाज को बुलंद करते हैं।

हद अनहद को दर्शाता बावड़ी गाँव का भौगोलिक दृश्य

इसमें जो दूर क्षितिज नजर आ रहा है वह कथित रूप से पाकिस्तान है पर सर ज़मीन कह रही है, एक ही तो है हम!

चौतारा वीणा भजन मण्डली

मेघवाल समुदाय जिन्हे यहां रीखीया भी कहते हैं, ये गांव के सामाजिक पारिवारिक कार्यक्रमों में भजन गाते हैं, जिसे जागरण कहते हैं। जागरण की शुरूआत से लेकर रात भर के प्रत्येक पहर के लिये भजनो का एक निश्चित क्रम होता है । जो निम्न प्रकार से है

- गणेश जी के भजन
- पाट भजन
- चेतावनी भजन
- गुरू महिमा
- विभिन्न राग-सोरठ, धमाल, माड, प्रभाती आदि के भजन
- हैली प्यारी फकीरी भजन

आरती के द्वारा जागरण का समापन किया जाता है। विभिन्न पौराणिक कथाएं जैसे शिव विवाह, अम्बारस, नानीबाई का मायरा, मेगड़ी पुराण, कृष्ण की कथा, रामायण एवं कई लोक देवताओ की कथाएं भी गाते हैं।

मारवाड़ की मनुहार, मीठा-मतीरा
व बतलावणी के साथ

नारणाराम मेघवाल

नारणाराम मेघवाल, उम्र 42 वर्ष, निवासी बावड़ी

यह चौतारा वीणा वादन व भजन गायकी करते हैं और करीबन 25 वर्ष से गाना-बजाना कर रहे हैं। यह कला अपने बुजुर्ग पिता से सीखी थी। विभिन्न गावों व शहरों मे कार्यक्रम करते आ रहे हैं। कला के साथ-साथ खेती व पशुपालन का काम भी करते हैं।

चौतारा (वीणा)

यह एक तार वाद्य यंत्र है जो लकड़ी से बनाया जाता है जो अन्दर से खोखला होता है। इसका आगे का सिरा गोल एवं पीछे का भाग लम्बा होता है। इसमे चार या पाँच तार बंधे हुए होते हैं। पाँच तार वाला यंत्र परिपूर्ण माना जाता है ।

चौतारा वादन का तरीका - बजाते समय इसका आगे का गोल सिरा ज़मीन की तरफ होता है एवं पीछे का भाग बजाने वाले के कंधे पर टिका रहता है। चौतारा के तारों को ढीला कर या तानकर इसके सुर को बदला जाता है। इसमे अधिकतम सात सुर होते हैं। इसे दाएं हाथ की तर्जनी अगूंली से बजाया जाता है और अगूंली पर एक टोपी नुमा यंत्र पहन कर तने हुए तारों पर प्रघात किया जाता है, जिसके कम्पन से धुन निकलती है ।

भागूराम मेघवाल, उम्र ३४ वर्ष, बावड़ी का रहने वाला है। यह चौतारा, मंज़ीरा वादन व भजन गायकी करते हैं। अपने पुत्र व चचेरे भाई नारणाराम के साथ मिलकर गाते हैं। भागूराम करीबन २० वर्ष से गाना-बजाना कर रहे हैं। अपने पिता से गाना-बजाना सीखा था और अभी अपने बेटे को भी सीखा रहे हैं।

तेजाराम

तेजाराम पेशेवर से नाई है, उम्र ५० वर्ष, बावड़ी का रहने वाला है और शौक से गायन व घड़ा ढोल वादन करते हैं। इनका घड़ा वादन बड़ा अनौखा है।

घडा वादन

मिट्टी के घड़े के मुंह पर कपड़े को तानकर बांधा जाता है । फिर कपड़े को पानी से भीगोते है जिससे उसमें तनाव आ जाता है। उसके बाद सूखी राख लगाई जाती है जिससे कपड़े के छिद्र बंद हो जाते है। तब यह चमड़े की तरह काम करता है। अंगुलियों से पीटने पर धम की आवाज़ निकलती है। साथ मे कांस्य धातु का कटोरा भी होता है, जिस पर अंगुलियो की चोट मारने पर ताली की अवाज निकलती है। ये दोनो मिलकर ताल वाद्य का काम करते हैं।

चतराराम मेघवाल

उम्र 60 वर्ष, बावड़ी का रहने वाला है। यह मंज़ीरा वादन व भजन गायन में साथ देते हैं। भजन गाते समय समूह में इनकी भूमिका श्रोताओ का ध्यान आकर्षण बनाये रखने की होती है। ये मुस्कराते हुए अलग अलग तरीके से मंज़ीरा वादन करते हैं।

मंज़ीरा

मंज़ीरा कास्य धातु के बने हाते है। इन्हे जीझां भी कहते हैं। इनका जोड़ा होता है दोनो साथ बजाये जाते हैं। यह ताल वादन यंत्र है।

मैं हूँ तैयार इसे आगे ले जाने के लिए

दिनेश कुमार, पिता का नाम भागूराम मेघवाल, उम्र 14 वर्ष, बावड़ी का रहने वाला है। यह खंजरी - करताल वादन करते हैं। अपने पिता के साथ गायन मे जाते हैं व खंजरी बजाते हुऐ गायन और नृत्य में इस तरह डूब जाते हैं जिससे मंडली की ताजकी बनी रहती है।

खंजरी करताल

ये लकड़ी की बनी होती है, जिसमे लोहे के छल्ले लगे होते है। जो दोनो हाथों में अंगूठा और अंगूलियो में पकड़ कर वादन किया जाता है, जिससे झंकार की अवाज निकलती है।

महिलाएं अपने घर का काम करने के बाद अपनी रोजी रोटी के लिए नरेगा का काम करती है। साथ ही पारम्पारिक संस्कृति से जुड़ा हस्त कला का कार्य भी करती है। कपड़े पर पेचवर्क व कसीदा कारी का काम करके अपने घर और बच्चो के लिए बचत करती है।

धोरो वाली धरती पर बने झोपों में महिलाओं द्वारा बनाई गई विभिन्न प्रकार की कला और मांडणा की रचनाएं मिलती है। बिजली नहीं होने के कारण झोपों में छोटी-छोटी जगह हवा और रोशनी के लिए रखी जाती है जो पारम्परिक वास्तु शिल्प युक्त होती है ।

1 काशी नगर से विप्र बुलाया लिख -लिख मेला चीर

गायक - नारणाराम, कबीर भजन

दोहा :- आया हाथी घोडा घणा चन्द्रमुखी घर नार !
प्रभु के नाम बिना जिम लोक मे पावे दुख अपार !!

काशी तो नगर मे विप्र बुलाया लिख लिख मेलिया चीर जी
बीज तीज को जीमण आवजो जगन रचायो कबीर
रामईऐ बिना कुण बधावेला थीर वेल कोण बधावेला थीर बलीयारी
रामा संत गुरू बिना कुण बधावेला थीर !

लोभी री माया पले नी राखी पडी भक्त ना भीड वन खलु वन !
खण्ड ढूढते विलखो वहो शरीर रामईऐ बिना कुण बधावेला थीर !!

अनेक कडाईया अनेक भडारा अनेक भरा जल नीर आप हरी हुआ !
बंनजारा बेला करी वहीर रामईये बिना कुण बधावेला थीर !!

संतगुरू म्हारे कृपा किन्ही पडे समुन्द्रा मे चीर कहान्त कबीर !
सुनो भाई सादू मै तेरा मस्त फकीरा रामईये बिना कुण बधावेला थीर !!

2 बागा मे बेठी मालण बोली

गायक - नारणाराम, कबीर भजन

दोहा :- संत मिलन को चालियो तज माया अभिमान
ज्यो ज्यो पग आगे धरो पग पग जीग समान
सत मिले इतना टले काल जाल जिम चोटरे

शिश ले चरणा मे धरो तो गिर पडे लख पापन की पोट !
बागा मे बैठी मालण बोली ऐइज बागा थीर रेसी !!
हरी हरी कलीया चुग ले मालण फेर चुगण कद आसी !
हरे मालण घणी अनीती नही है आछी ....!!

राज करतो राजा बोल्यो मेरा एई राज थीर रेसी
अरे न्याय निती से चालो राजा फेर करण कद आसी
साधु भाई घणी अनिति नही आछी ....!!

हाटा मे बैठो बणियो बोल्यो मेरा ऐई हाट थीर रेसी
पुरो - पुरो तोल बणिया फेर तोलण कद आसी
साधु भाई घणी अनिति नही आछी ....!!

वेद पढन्तो ब्राहमण बोल्यो मेरा ऐइज वेद थीर रेसी
न्याय निति से वाचो ब्राहमण फेर वाचण कद आसी
साधु भाई घणी अनिति नही आछी ....!!

क्या ले आयो क्या ले जासी तेरे नेकी बंधी चढ जासी
रामानंद रो भणे कबिरो खाली हाता उड जासी
साधु भाई घणी अनिति नही आछी ....

3 पेला दिल अपना सोजो

गायक - नारणाराम, कबीर भजन

दोहा :- हाथ जोड विनती करू धरू चरण मे शीश
ज्ञान भक्ति मोये दीजो परम पिता जगदीस
राम दडी मैदान पडी सबको खेली जाय
ऊंच नीच का काम नही तो जीते सोय ले जाय

पेहला दिल आपनी सोचो पीछे पावडो दीजो
करो श्रदा सत गुरू आगे हिम्मत हार मत दीजो
भक्ति राजी होवे ने किजो जो थारो महिलो कहो न माने
दोस गुरा ने मत दीजो भगती राजी होये ने कीजो

जुठ निदा कुबद कटारी एईज पहला तज दिजो
सतगुरू सयाम मुक्ति रो दाता वारो शरणो लिजो
भक्ति राजी होवे ने किजो जो थारो मन कहयो नही माने
दोस गुरा ने मत दीजो भक्ति राजी होये ने कीजो

जो थारी इच्छा हे तरवा री तुरन्त तैयारी कर लीजो
शिश उतारे धरो गुरू आगे तन मन अरपण किजो
भक्ति राजी होये ने कीजो ....

अला पिगला सोज सुखमणा घर त्रिभणी रो लिजो
रामानंन्द रो भणे कबिरो सदा आंनन्द मे रइजो
भक्ति राजी होये ने कीजो ....

4 चरखा

गायक - नारणाराम, कबीर भजन

दोहा :- राम भणो प्राणीया तो अवरा को राम बणीया
जीण मुख राम नी उचरे तो उण मुख लोहा जणा

जल जायी तल उपनी रही नगर मंझार एक अच्बो देखीयो
बेटी जायो बाप सुण चरखे वाली नार चरखे सु चित लगाय
सुण कातन वाली नार ....

बेटी कहे बाबा मेरो ब्याव करा अण जायो वर ला
अण जायो वर नही मिले तो जिनमे सो मर जाय
सुण कातन वाली नार ....

सासु मरियो सुसरो मरीयो परणया सो मर जाय
एक न मरे सुथारीयो जीण चरखो दियो बणाय

रूई पिआवण मे गई सुण पिजाणा मेरी बात
ऐसी रूई पिजले तार सु तार मिल जाय
सुण कातन वाली नार ....

जेठाणी रे घरे आतण माडयो देराणी बहे आव
देवरीयो परणीजण आय नणदल फेरा खाव
सुण कातन वाली नार ....

चरखो मारो रंग रंगीलो पुणी लाल गुलाल
कातण वाली नारी सुन्दरी लुण लुण ढाले तार
सुण कातन वाली नार ....

चरखो चरखो सब करे चरखो लखियोनी जाय
चरखो लखियो सत कबीर बेठो हरी रा गुण गाय
सुण कातन वाली नार ....

5 काशी नगर से ब्राहमण आयो

गायक - नारणाराम, कबीर भजन

दोहा :- आया हाथी घोडा घणा चन्द्रमुखी घर नार
प्रभु के नाम बिना जिम लोक मे पावे दुख अपार

काशी नगर आया ब्राहमण चार वेद पढ लाया जी
आणे कबीर घर पाणी पीया पाणी पीये पछताया जी
बाजारा मे गयो कबीरो पाछो आवण दीजो रे

पाणी पीयो जल छाणे देवता खुब पीयो जल पाणी जी
बाजारा मे गयो कबीरो पाछो आवण दीजो रे

ऊचा टागीया सुत काबला नलीये सुत नीसाना जी
मे थाना पूछा बडा ब्रहामण नीच कुम क्या जाण्या जी
बाजारा मे गयो कबीरो...

जल की मछीया जल मे बेयायी जल मे किया घर वासा जी
मै थाना पूछा बडा ब्रहामण ओ एक पाणी पीता जी
बाजारा मे गयो कबीरो...

हाट झरे ज्यो चिम झरे चिम झरे ज्यो रस आया जी
मै थाना पूछा बडा ब्रहामण ओई एक माखण खाया जी
बाजारा मे गयो कबीरो...

छॅटो नाखावे चोको देरावे बहुत करे चतुराया जी
उड गई माखी बैठी भोजन पर डूब गई चतुराया जी
बाजारा मे गयो कबीरो...

सुत ओढण ना सुत पेहरण ना सुतन का सिर भारा जी
तेरे गले मे ब्रहम जीनोईया ओई एक सुत हमारा जी
बाजारा मे गयो कबीरो...

फाडे पोतीया पला फेकीया लुण लुण सिस निमाया जी
धन धन कमाली कबीरसा री लडकी ओ गुरू ज्यो ज्ञान बताया जी
पाणी पीयो जल छाणे देवता खुब पीयो जल पाणी जी
बाजारा मे गयो कबीरो पाछो आवण दीजो रे !!

6 हंसा चुगले मोतीडा रो चुण

गायक - भागूंराम, कबीर भजन

दोहा :- पानी से पतला कौन हे कौन भूमी से भारी अग्नी से तेज कौन हे कौन
काजल से काली ज्ञान पानी से पतला हे पाप भूमी से भारी क्रोध अग्नी से
तेज हे कंलक काजल से काली !!

हारे हंसा रे चुग ले चुग ले हारे मोतीडा री चूण
हंसा मोतीडा री चूण हीरला तो हरी रे नामरा
हंसा भाई रे लेणो लेणो रामइऐ रो नाम
सावरीया थारो नाम माला फेरा हरी रे नाम री
हंसा भाईरे बोली रे बोली हंसा कोयल वाला बोल कौआ री वाणी हंसा छोड दे
हंसा भाईरे बेसे बेसे हंसा साधूडा री जोडे नुगरा रो टोलो हंसा छोड दे
हंसा भाईरे चलणो चलणो हंसले वाली चाल बुगला री चाल हंसा छोड दे
हंसा भाईरे लागो लागो हंसा सावणिऐ रो मास भादरवो भलो हंसा आवीयो
हंसा भाईरे जौवा जौवा मे तो रामइऐरी वाट सावरीया थारीरे वाट वैरागण हरीरे नाम री
हंसा भाईरे पीवणो पीवणो गंगाजल रो नीर छीलरारो पानी हंसा छोड दे
हंसा भाईरे जौवा जौवा मे तो रामइऐरी वाट सावरीया थारीरे वाट वैरागण हरीरे नाम री
हंसा भाईरे बोल्या बोल्या कबीरो धर्मी दास साधो रे संगडे चालणो
हंसा भाईरे जौवा जौवा मे तो रामइऐरी वाट सावरीया थारीरे वाट वैरागण हरीरे नाम री

7 गोढ पकड कर चढो मेरा भाईडा

गायक - भागूंराम, कबीर भजन

दोहा :- हरी ऐसी बानी बोलीये वीरा मन का आपा खोल हरे ओरन को शीतल करे आपा शीतल होय !

रहीमन धागा प्रेम का वीरा मत तोडो चिटकाय टूटे से फिर ना जुडे जुडे तो

वीरा गॉंठ पड जाय !!

गोढ पकड कर चढ म्हारा भाइया जाफरीया मत झेलो

सत वचन री डोरी पकडले अधर सिहासन डोले

साधु भाई चलीयो आवे सीधे गेले.......................................

अध बीच कोई नही झेले साधु भाई चलयो आवे सीधे गेले

कोयल वाणी बोल मेरा भाईडा कोआ री वाणी हेठी मेलो

कोयल होवे सोये बागा मे बोले कौआ घर घर डोले

साधु भाई चलयो आवे सीधे गेले.......................................

अध बीच कोई नही झेले साधु भाई चलयो आवे सीधे गेले

हसला री होड करे नर बुगला जाय छीलीरीया मे झेले

हसला होवे सो चुगे नीज मोती बुगला जीवडा झेले

साधु भाई चलीयो आवे सीधे गेले.......................................

अध बीच कोई नही झेले साधु भाई चलयो आवे सीधे गेले

आया संता री सेवा जो करीये धर्म झकोला लेवे

कहत कबीर सुनो भाई साधु बोलिया कबीरो सुन भाई साधु अमरा पुर मे बोले साधु भाई चलीयो आवे सीधे गेले

अध बीच कोई नही झेले साधु भाई चलयो आवे सीधे गेले

1 माधव रे मन्दिर मे मीरा एकली खडी

गायक - भागूंराम, मीरा भजन

दोहा :- देने को अन दान हे वीरा लेने को हरी नाम तरने को अधीनत डुबने को अभिमान बोली एक अनमोल हे जे जाणे कोई बोल हीये तराजू तोल के मुख बाहर बोल !!

थे केवो सावरा मोर मुकुट बन जाऊ पेरण लाग्यो सावरा थारे

सिर पर रम जावा मोहन आवो तो खरी सावरा आवो तो खरी

माधव रे मन्दिर मे मीरा एकली खडी ....

थे केवो तो सावरा जल जमना बन जाऊ नावण लागो सावरा

रूम रूम रम जावा माधव रे मन्दिर मे मीरा ....

थे केवो तो सावरा बाशुरी बन जाऊ बजावन लागो सावरो

तेरे होठा मे रम जावा सावरा माधव रे मन्दिर मे मीरा ....

थे केवो तो सावरा काजलीयो बन जाऊ सुरमो सारो तो सावरा

थारे नेण मे रम जावा माधव रे मन्दिर मे मीरा ....

थे केवो तो सावरा मोजडली बन जाऊ पेरण लागो सावरो

थारे पेराण मे रम जावा सावरा माधव रे मन्दिर मे मीरा ....

मीरा हरि रे लाडली है वचना री साची गोपीया रे श्याम

आगे बाध घुघरा मीरा नाची सावरा आवो तो खरी सावरा

माधव रे मन्दिर मे मीरा...

2 रमता जोगी आवो हमारे देश

गायक - भागूंराम, मीरा भजन

दोहा :- चिडिया पिवत जल नही खुंटे नदी नही खुंटे नीर !

धर्म करता धन ना खुंटे कह गया दास कबीर !!

पावं घडावा पेरणी करले भगवा वेश काने तो कमडल नाथजी

निमे करा आदेश रमता जोगी आवो हमारे देश

आवण जावण कह गया कर गया कवल अनेक

दिनडा गुणती रा नखला गस गया गाठी आगलिया री रेख

रमता जोगी आवो हमारे देश...

पाना जेसी पीली भई लोग जाने अंग रोग छाना लगण

मे कटा प्रिया मिलण के कोड रमता जोगी आवो हमारे देश

कागज पान मेरे हाथ नही है नही लिखण वन राय

सुवटा हमारे पास नही हे केना मेला संदेश

रमता जोगी आवो हमारे देश...

धरती केरा कागज बनाडा लिखड कराणा वन राय

साता समुद्रा री स्याही बनाई हरि गुण लिख्यो जाय

रमता जोगी आवो हमारे देश...

आयो श्रावण भादवो नदियॉ वहे भरपुर मीरा हरि रे लाडकी

रहे भजन भरपुर अरे रमता जोगी आवो हमारे देश

बालुडा जोगी आवो हमारे देश...

3 कामण गारो कानजी

गायक - भागूंराम, मीरा भजन

दोहा :- संत बडा परमार्थी शीतल बांका अंग तपत बुझावे ओरन की देवे अपना रंग

हरी सकवो बिछडीयो रेण सूं वीरा आड मिले प्रभात हरे मन बिछडीयो हरी

नाम सू तो वीरा वो दिन मिले न रात !!

बिरजा वन मे कानो धेन चरावे बालो बिन बजावे कामण गारो

कानजी मनडो मोयो वेरागी कानजी मनडो मोयो वेरागी

सते भोजनीये थाल परीया एकलडीना नही भावे कामण गारो

कानजी मनडो मोयो वेरागी...

रंग मोहल मे ढोल्यो ढलायो नेणा मे नीद नही आये

कामण गारो कानजी मेरो मन मोयो वेरागी

सूते काने ना कुण जगावे बतालीये विलमायो

कामण गारो कानजौ मन मोयो वेरागी

मोहनदास कृपा किनी ऐ जस मीरा बाई गायो

कामण गारो कानजौ मेरो मन मोयो वेरागी

दूजो म्हारे नजरा मे नी आवे कामण गारो कानजौ मन मोयो वेरागी

4 सुतो राणो सुख भर नीदं

गायक - नारणाराम, मीरा भजन

दोहा :- कबीरा खडा बाजार मे सबकी मांगे खेर !
ना किसी से दोस्ती ना किसी से बेर !!

सुतो राणो सुखडे भरी नींद सुते ना सपनो आयो
सपनो विशवा विश मीरा हो गयी भगवे वेश
सुणो वेलया हमारी बात कारेला पलाडो जुनी झोकरा
ढलया राणो जी आधोडी अध रात सोआ कोसा दिनडो उगायो

गवालीया तू म्हारे धर्म रो वीर मारगीयो बता मीरा रे देश रो
डावो जावे गढ गीरनार जीमणो जावे मीरा रे देश
छाणा चुगणार पाडी री पड्यार ओरणा बताओ मीरा रे बाप रा

सामी दिखे साधुडा री जीमात सामा दिखे मीरा रा ओरणा
हाथे मीरा रे मडतग ताल पागे बाजे धुधरा चिटके चणी राणेजी
ना रीस सोवनो कटारो काठयो ऐकी मीरा मे होगी हजार
कई मीरा ने राणोजी मारसे ....

5 ध्यान धरे मीरा प्रभु संभाले

गायक - नारणाराम, मीरा भजन

दोहा :- नारायण तेरे नाम की मोडी पडी पहचान !
कई दिन गोया बालापन कई दिन गोया अजाण !!

ध्यान घरे मीरा प्रभु सभा ले पुजा करे हट पट की सालग देन
ना चिदण चढावे भाग तिलक दे दबकी जागृत है सक घर की
भक्ति करो पर घट की नाथ तम जागृत हे सब घटी की

राम मंदिर बाई मीरा नाचे ताल बजावे चीपटी पावे धुधरीया
रिम झिम बाजे लोग संसार की झटकी नाथ तम जानत हो घटकी

विष रासयाला राणेजी भेज्यो सत सगत मीरा अटकी
ले चरणावत पिवण बैठी अमृत हो गई वटकी
नाथ तम जाणत घट की

सुतर डोरी पर बाई मीरा नाचे सिर घडला उपर मटकी
बोल्या मीरा बाई गिरधर ध्यायो सुरत लागी इण नट की
नाथ तम जाणत घट की

6 हेली

गायक - नारणाराम, मीरा भजन

दोहा :- संत हमारी आत्मा हम संतन की देह रूम रूम मे रम रहया ज्यो बादल मे मेह
गुरू धोबी शिष्य कपडा साबु शिर्जन हार हरी प्रेम शिला पर धोय ले निकले
मेंल अपार !!

दातण देराडो काची केर रो म्हारी हेली लोटे गंगाजल नीर

हाथी हेमर अवरे छोडीया हे मारी हेली छोडी धोडला री जोड

सेजा पंलगा रे आवे छोडया हे मारी हेली छोडी मोहला री आस

कहे कबीरा धर्मीदास ना मारी हेली अमर लीयो उपदेश

चन्दन उगो हरीये बाग मे हे मारी हेली रूखे बधी ले आस

मै रही चन्दन ना रही थापसा मारी हेली लेसा सुमन्धि वास

संगत किजिये निर्मल साध री मारी हेली आवागमन मिट जाय

वंश उगो वन वाशमे मारी हेली थर रही वन राय

आप बले ना अबरा ना बालसे जेरे गाठ घट माय मारी हेली

दव लागो डरे डुगरे जल रही वन राय तू क्या जले वन सा

सुवटा उडे परे को जाय

फल खाया पान विरूला रम्यो डालो डाल थे जलो मे उभरा जीवणो कितनी बार हेली

डव लागा झाला बुझ गई दुधे भुटा मेह कहत कबीरो धर्मीदास ना नीत नीत नवला नेह हेली

संगत किजिये निर्मल साध री मारी हेली आवागमन मिट जाय हेली !!

7 खमाखमा आलम राजा

गायक - नारणाराम, मीरा भजन

दोहा :- नारायण तू नेडो बसे अलगो मती बसे तूर
जिण देश ने मे सामरो जे आंख चढे हजूर !!

कहे ना गया था दिनडा दोह चार अय जुग चोथो
डोरडो बांधो काकंण बाधो हर थारी वाटा जोवा
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

उभी म्हारा साहेबा सरवरीय पाल वचन सरोदो
नीण सरोदो शारीयों हर थारी वाटा जोवा
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

जोगण होय जग ढूढीयो सामण होय
जुग सारो ढूढीयो हर थारी जोवा वाट
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

लिख लिख कागजीया मेला म्हारा सहेबा
भणाया हो तो बाच लेना हर थारी वाट जोवा
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

मांडो म्हारा साहेबा शीतले घोडे झीण उत्तर दखण
पूर्व पश्चिम कालीगें ना मार हर थारी वाट जोवा
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

बोलीया रूपादे मालदे घर नार जुगा जुग मेलो
भवा भव मेलो गुरू देवरो हर थारी वाटा जोवा
खम्मा खम्मा आलम राजा ना ....

गॉव पंचायत - भूणिया

तहसील - सेडवा

जिला - बाडमेर , राजस्थान, पिन कोड - 344704

गॉव भूणिया जो जिला बाडमेर से 80 कि.मी. धौरीमन्ना से 20 कि.मी चौहटन रोड पर स्थित है। यहां करीबन 500 घरो की बस्ती है कुछ परिवार अलग अलग ढाणियो व खेतो मे रहते है। अभी यहा पर पंचायत का मुख्यालय है।

यहा सुरनाईये लंगा परिवारो के 10 घर है। जो मुस्लमान परिवार होते है और उनकी जजमानी सिन्धी सिपाहीयो मे होती है ये पारिवारिक आयोजन जन्म शादी त्यौहार के अवसर पर सुरनाई बजाकर उसे परिपूर्ण करते है साथ ही मुरली मिस्क अलगोजा आदि भी बजाते है विभिन्न राग जैसे सौरठ काफी मल्हार श्याम कल्याण व लोक धुने अरणी झेडर डोरा आदि का वादन करते है। ये सामुदाय पारम्पारिक कलाकार होते है। लंगा मुख्यत दो प्रकार के होते है :-

१ सुरनाई लंगा - ये सुरनाई व अन्य फूक वाद्य पर वादन करते है

२. सारंगीया लंगा :- ये सारगी पर गायन वादन करते है

रामदीन खॉं लंगा

रामदीन खॉं पिता का नाम गफूर खॉं उम्र 70 वर्ष गॉंव- भूणिया के रहने वाले है। यह शहनाई, मुरली, अलगोजा आदि का वादन करते है। विभिन्न गावो व शहरो मे कार्यक्रम करते आ रहे है। कला के साथ मुर्गी पालन का काम करते है।

हयात खाँ लंगा

हयात खॉ पिता का नाम गफूर खॉ उम्र 60 वर्ष गॉव-भूणिया के रहने वाले है। ये रामदीन खान के छोटे भाई है। यह शहनाई, मुरली, आदि का वादन करते है। विभिन्न गावो व शहरो मे कार्यक्रम करते आ रहे है। कला के साथ खेती व मुर्गी पालन का काम करते है।

नालेमीठा खॉ उम्र 35 वर्ष रामदीन खॉ के पुत्र है। यह शहनाई, मुरली, अलगोजा आदि का वादन करते है। यह कला अपने पिता से सीखी है और अब अपने बेटे अजरूदीन को सीखा रहे है व विभिन्न गावो व शहरो मे कार्यक्रम करते आ रहे है। कला के साथ खेती का काम करते है।

खबड खॉ पिता सतार खॉ उम्र 40 वर्ष गॉव- भूणिया के रहने वाले है। यह शहनाई, मुरली, अलगोजा आदि का वादन करते है। विभिन्न गावो व शहरो मे कार्यक्रम करते आ रहे है। कला के साथ खेती का काम करते है।

दुधिया

गाँव - गोदारो का तला, दुधिया

ग्राम पंचायत - मांगता, तहसील - धौरीमन्ना

जिला - बाड़मेर, राजस्थान, पिन कोड -344704

गॉव गोदारो का तला दुधिया जो जिला बाडमेर से 50 कि.मी. तहसील धौरीमन्ना से 30 कि.मी व हाईवे 15 नम्बर से करीबन 5 कि.मी. रोड से दूर पर स्थित है। यहां करीबन 300 घरो के परिवार अलग अलग ढाणियो मे, रेतीले टीबो मे व खेतो मे रहते है। इस गॉव मे मेगवाल, जाट, राजपूत, नाई, सुथार, लगा, भील, मुस्लमान, आदि रहते है। इस लिए इस गॉव का नाम बावडी पडौ। अभी यहा पर पंचायत का मुख्यालय है सरकारी हाई स्कूल उप स्वास्थ्य केन्द्र पटवार घर व मरूधरा ग्रामीण बैंक है।

अल मस्त फकीर धोधे खॉ लंगा

सीमा से परे कला का साझा करते अलगोजा कलाकार धोधा खॉं पिता का नाम मीरा खॉ मां का नाम मारियत गॉव-दूधिया गोदारो का तला तहसील चोहटन जिला बाड़मेर (राज) के रहने वाले है। सड़क से करीबन 500 मीटर पैदल चलकर इनके घर जाना पड़ता है, क्योंकि धोरों के टीलों पर साधारण वाहन नहीं जा पाते है। राणका लंगा परिवार में जन्मे ७५ वषीय दुबले-पतले लम्बे से धोधे खॉ अलगोजा के अव्वल कलाकार है। इस इलाके के सभी कलाकार धोधे खॉ को उस्ताद मानते है।

धोधे खॉ की कहानी

बचपन से ही धोधे खॉ भेड़ - बकरी चराते समय शौकिया तौर पर अलगोजा बजाया करते थे। सीखने की आस्था में धोधे खॉ एक दिन चल पडे बोर्डर पार उस्ताद मिश्री जमाली के घर अलगोजा सीखने। सीमा -रेखा के औपचारिक कार्यवाही की परवाह न करते हुए अल मस्त फकीरी के अंदाज मे अपनी मंजिल तक पहॅुचे। उस दौरान भारत पाकिस्तान अलग हुऐ ही थे और बार्डर पर उतनी औपचारिकताए भी नही थी। कुछ समय वहॉ रहकर अलगोजा सीखा लेकिन वापस आते समय उन्हें बार्डर चौकी पर पकड लिया गया। ठीक उसी तरह के हालात हुए जैसे एक बच्चा बाग से आम चुरा कर ले जाते समय किसी चौकीदार द्वारा पकडा जाए। जब इनकी तपदीश की गई तब उनके झोले से अलगोजा जोडी निकली और पूछताछ करने पर गॉव वालो ने भी उन्हें साफ दिल इंन्सान बताया। तब उन्हें छोड दिया गया। आला अधिकारियो द्वारा मांग करने पर धोधे खॉ ने अलगोजा से डोरा गीत की धुन सुनाकर उन्हें मस्त कर दिया।

और वहॉ से आगे चल कर ऑल इण्डिया रेडियो से जुड़े यहॉ रेडियो कार्यक्रम ‘‘सीमाडे री गूॅंज‘‘में मोरू बाई धुन से कार्यक्रम को संगीत दिया और रेडियो के चहेते कलाकार बने। फिर नेहरू युवा केन्द्र में २५ नये युवको को अलगोजा सिखाया तथा सोनिया गॉधी -राजीव गांधी की शादी में इटली जाकर अलगोजा पर म्हारो बनडो हजारी गुल रो फूल- धुन सुना कर शादी मे शिरकत की। और अपना सारा जीवन अलगोजा संगीत के नाम किया, इतनी सफलता के बावजूद उनका विनम्र भाव तथा गॉव मे साधारण जीवन शैली के साथ जीना हम सब के लिए एक बडी सीख है।

अलगोजा

अलगोजा पावा जोडी ये फूंक वाद्य यंत्र होता है ये दो प्रकार होते है एक पावा जोडी जो दोनो बराबर नाप की होती है और दूसरी डेढी यानि नर पाईप लम्बा व मादा पाईप आधा होता है। जो केर की लकडी से बनाया जाता है गर्म सलाके से केर की लकडी मे छेद ं करके इसे तैयार किया जाता है इसमे एक सुर नर व एक मादा का होता है नर सुर एक सतत् स्वर निकालता रहता है व मादा सुर से विभिन्न स्वर द्वारा धुन बनाई जाती है यह नकसासी विधि द्वारा बजाया जाता है।

Contact Details
Khamayati Project
khamayati@gmail.com
SWRC, Barefoot College, Tilonia, Ajmer - 305816
+919928376558 (Ram Niwas), +919602691980 (Shweta Rao)

Barefoot College (SWRC Tilonia), Rajasthan

Khamayati

Scheme: Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India, Ministry of Culture, Government of India

Project Title: Documenting and Promoting Traditional Music and Culture of Rajasthan

Catalogue of traditional/ceremonial expression, melody and songs

Field trips were made and ample time was spent with few musicians living in villages of Barmer districts and their repertoire was documented.

Category/ Genre of Music documented so far

1. Ragas (Morning, Afternoon, Evening, Night) - 2 Musicians from the Manganiar community

2. Jangra Shaili - 2 Musicians from the Manganiar community

3. Meera Bhajan - 5 musicians from the Chautara Vadan community/ Bhajan Mandli

4. Kabir Bhajan - 5 musicians from the Chautara Vadan community/ Bhajan Mandli

Objective

- To produce a book which will carry information about a village, musicians residing in that village, their community, other details such as lyrics etc with photographs.
  (Rough draft attached)

- Archiving traditional Marwari songs (audio) by these musicians

1. Bisu Kala

Bisu Kala is a village in Shiv block, 15 kms from Shiv and is located on the Barmer - Jodhpur highway. Around 15 Manganiar families live here. Manganiar communities are musicians who form a very important aspect of ceremonies and functions in villages. They sing traditionally for their Rajput patrons during family occasions such as birth, weddings, festivals etc.

Photographs taken at Bisu Kala

We documented two great musicians from the Manganiar community who live in this village and are known for their mastery over a particular style of rendition called the 'Jangra Shaili.' Jangra shaili is a complex way of singing traditional marwari songs in which musicians sing with difficult variations, maintaining the pace and rhythm of the song.

The two musicians documented were:
Chanan Khan Manganiar
Multan Khan Manganiar

Chanan Khan is a very senior musician who is an expert Kamaicha player. Kamaicha is a traditional string instrument, which is played with a bow. He is also a vocalist. Multan Khan, his younger brother is also an exceptional vocalist. Both the musicians are very well known for their Jangra style rendition.

Chanan Khan Manganiar playing his Kamaicha

13 songs have been recorded in Jangra style and these songs are based on Ragas which are time specific. For example, Raag Bilawal is played between 8am and 10 am, Raag Sarang from 1 PM to 2 PM etc.

<u>List of songs recorded (Jangra Shaili)</u>
1.Bisu ka badla
2.Hasti Chadh aaye (Raag - Asha, 6 am - 8 am)

3.Bini Chodh (Raag - Todi, 10 am - 11am)
4.Heli (Raag - Goondmalhar, 12 pm - 1 pm)
5.Radha Rani (Raag - Kalyan, 7 pm - 8 pm)
6.Payal geheri baaje (Raag - Sorath, 00 - 1 am)
7.Halariya (Raag - Shameri)
8.Ujali Bhaboot (Raag - Bilawal, 8 am - 10 am)
9.Bageli tharo banado (Raag - Shubh, 4 pm - 5 pm)
10.Rameriya baag me (Raag - Kafi, 10 pm - 11 pm)
11.Kaman Garo kanji (Raag Bhervi, anytime)
12.Barsalo (Raag- Sarang, 1pm-2 pm)
13.Khammaji (Raag- Maru 3 pm-4 pm)

2. Bawdi

Bawdi is a village located in Chauttan block of Barmer district, very close to the India-Pakistan border. Musicians from the Meghwal community were documented from this village. Bawdi, derives its name from a small well which used to exist in this village. Many small hamlets located around the sand dunes together constitute this village.

Traditional instruments used by the musicians

These musicians sing Meera, Kabir, Ramdev and other bhajans. The traditional instruments used are chautara, manjira, and a clay pot. Their bhajan sessions often called ‘satsangs’ usually happen all through the night.

List of songs recorded

Kabir Bhajan
1.Kashiji se brahman aaya chaar ved padh laya
2.Vaga mein baithi maalan boli, ghani aneeti nai aachi
3.Pehla dil apni socho peeche paanv dijiyo
4.Charkha
5.Kabir khada bazaar mein
6.Hansa chugle chugle moti

Meera Bhajan

1. Suta rano sukh bhari neend
2. Dhyan dhare meera prabhu sambhale
3. Meera ekali khadi
4. Ramta jogi aao humare des
5. Kaaman garo
6. Heli